(1)

[This question paper contains 4 printed pages]

Your Roll No. : ....

Sl. No. of Q. Paper : **2075** **I**

Unique Paper Code : 2052101101

Name of the Paper : Aadikal evam Nirgunbhakti Kavya **हिंदी कविता : आदिकाल एवं निर्गुण-भक्ति काव्य**

Name of the Course : **B.A.(Hons.) Hindi**

Semester : I

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 90***

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश :

(i) इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(ii) **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए । 9×3=27

(क) भयौ एक फुरमान। बान जोगिनिपुर संध्यौ।।
सुइ सबद अरु बान। अग्र अबिचल कर बंध्यौ।।
बयौ बियौ फुरमान। तानि रष्यौ श्रवनंतरि।।
तियौ भयौ अनभयौ। हरयौ पीतसाहि धरंतरि।।

P.T.O.

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

लै दसन रसन तालु असघन। सीस फट्टि दह दिसि गबन।।
सुरतान परयौ षां पुक्करै। भयौ चंद राजन मरन।।

अथवा

बदन चाँद तोर नयन चकोर मोर
रूप अमिय-रस पीवे।
अधर मधुर फुल पिया मधुकर तुल
बिनु मधु कत खन जीवे।।
मानिन मन तोर गढ़ल पसाने।
कके न रमसे हसि किछु न उतरि देसि
सुखे जाओ निसि अवसाने।।

(ख) सतगुर साँचा सूरिवाँ, सबद जू बाह्या एक।
लागत ही में मिलि गया, पढ़या कलेजै छेक।।
सतगुर मारया बाण भरि, धरि करि सूधी मूठि।
अंगि उघाड़ै लागिया, गई दवा सूँ फूंटि।।

अथवा

बिरहा बिरहा जिनि कहौ, बिरहा है सुलितान।
जिह घटि बिरह न संचरै, सो घट सदा मसान।।
अंषड़ियाँ झाई पड़ी, पंथ निहारि निहारि।
जीभड़ियाँ छाला पड़्या, राम पुकारि पुकारि।।

(ग) खेलत मानसरोवर गई। जाइ पाल पर ठाढ़ी भई।।
देखि सरोवर हंसे कुलेली। पद्मावतीसौं कहहिं सहेली।।
ए रानी! मन देखु बिचारी। एहि नैहर रहना दिन चारि।।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

जो लगि अहै पिता कर राजू। खेलि लेहु जो खेलहु आजू।।
पुनि सासुर हम गवनब काली। कित हम, कित यह सरवर पाली।।
कित आवन पुनि अपने हाथा। कित मिलि कै खेलब एक साथा।।
सासु ननद बोलिन्ह जिउ लेही। दारून ससुर न निसरै देहीं।।
पिउ पियार सिर ऊपर, पुनि सो करै दहुँ काह।
दहुँ सुख राखै की दुख, देहुँ कस जनम निबाह।।

अथवा

धरी तीर सब कंचुकि सारी, सरवर महँ पैठीं सब बारी।
पाइ नीर जानौं सब बेली। हुलसहिं करहिं काम कै केली।।
करिल केस विसहर बिस-भरे। लहरैं लेहिं कवँल मुख धरे।।
नवल बसंत सँवारी करी। होइ प्रकट जानहु रस भरी।।
उठी कोप जस दारिवँ दाखा। भइ उनँत प्रेम कै साखा।।
सरिवर नहिं समाइ संसारा। चाँद नहाइ पैठ लेइ तारा।।
धनि सो नीर ससि तरई उई। अब कित दीठ कमल औ कूई।।
चकई बिछुरि पुकारै, कहाँ मिलौं, हो नाँह।
एक चाँद निसि सरग महँ, दिन दूसर जल माँह।।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

2. बानबेध समय का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए। 14

अथवा

बानबेध समय के काव्य-सौन्दर्य की समीक्षा कीजिए।

3. गीतिकाव्य परंपरा में विद्यापति का स्थान निर्धारित कीजिए। 14

अथवा

विद्यापति के काव्य के भाव-वैविध्य का परिचय दीजिए।

4. कबीर का काव्य 'आँखिन देखी पर आधारित है कागद लेखी पर नहीं', इस कथन के आलोक में कबीर के काव्य की समीक्षा कीजिए। 14

अथवा

कबीर की दार्शनिकता को विवेचित कीजिए।

5. सूफी काव्य परंपरा में जायसी का स्थान निर्धारित कीजिए। 14

अथवा

मानसरोदक खंड की अलौकिकता पर प्रकाश डालिए।

6. किसी **एक** विषय पर टिप्पणी लिखिए। 7

(क) विद्यापति की शृंगार भावना।

(ख) जायसी का काव्य सौन्दर्य।

(ग) कबीर की भक्ति भावना।

***

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

[This question paper contains 2 printed pages]

Your Roll No.	: ....
Sl. No. of Q. Paper	: **2104** I
Unique Paper Code	: 2052101102
Name of the Paper	: Hindi Sahitya Ka Itihas (Adikal Evam Madhyakal)
Name of the Course	: **B.A. (Hons) Hindi**
Semester	: I

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 90***

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश :

(a) इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(b) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. हिन्दी-साहित्येतिहास - लेखन की परम्परा का मूल्यांकन कीजिए। 15

अथवा

आदिकाल के नामकरण की समस्या पर विचार कीजिए।

2. आदिकाल की सामाजिक - सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालिए। 15

P.T.O.

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

T-4 - (5)
T-6 - (4) (12)

अथवा

रासो काव्य की प्रवृत्तियों का सोदाहरण परिचय दीजिए।

3. निर्गुण काव्यधारा की प्रमुख प्रवृत्तियों का वर्णन कीजिए। 15

अथवा

सगुण काव्यधारा की प्रमुख विशेषताओं का विवेचन कीजिए।

4. रीतिकाव्य की प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए। 15

अथवा

रीतिकालीन वीर काव्य, भक्ति काव्य और नीति काव्य का परिचय दीजिए।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए :

(10+10+10=30)

(1) नाथ साहित्य

(2) जैन साहित्य

(3) रामभक्ति काव्यधारा

(4) प्रेममार्गी सूफी काव्यधारा

(5) कृष्ण भक्तिकाव्य

***

10/1/25(M)

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

(M)

[This question paper contains 4 printed pages]

Your Roll No. : ....

Sl. No. of Q. Paper : **2128** **I**

Unique Paper Code : 2052101103

Name of the Paper : Hindi Kahani

Name of the Course : **B.A (Hons) Hindi**

Semester : I

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 90***

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश :

(a) इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(b) **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिये।

10+10=20

(क) "कल, देखते नहीं – यह रेशम से कढ़ा हुआ शालू।" लड़की भाग गई लड़के ने घर की राह ली। रास्ते में एक लड़के को मोरी में ढकेल दिया, एक छाबड़ी वाले की दिन-भर की कमाई खोई, एक कुत्ते पर पत्थर मारा और एक गोभी वाले के ठेले में दूध उड़ेल दिया। सामने नहाकर आती हुई किसी वैष्णवी से टकराकर अंधे की उपाधि पाई तब कहीं घर पहुँचा।

P.T.O.

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

(ख) अब घर का फालतू सामान अलमारी के पीछे और पलंगों के नीचे छिपाया जाने लगा था। तभी शामनाथ के सामने सहसा एक अड़चन खड़ी हो गई, माँ का क्या होगा ? इस बात की ओर न उनका और न उनकी कुशल ग्रहणी का ध्यान गया था। मिस्टर शामनाथ श्रीमती की ओर घूम कर अंग्रेजी में बोले - माँ का क्या होगा ?

(ग) और अचानक ही उन्होंने निर्णय ले लिया कि अब घर कि किसी बात में दखल न देंगे। यदि गृहस्वामी के लिए पूरे घर में एक चारपाई कि जगह यहीं है तो यहीं पड़े रहेंगे। अगर कहीं और डाल दी गई, तो वहाँ चले जाएँगे। यदि बच्चों के जीवन में उनके लिए कहीं स्थान नहीं तो अपने ही घर में परदेशी की तरह पड़े रहेंगे।

(घ) देखिये, छोटी-मोटी घटनाओं को इतना तूल मत दें। दलित उत्पीड़न जैसा मेरे कॉलेज में कुछ भी नहीं है। और मैं इन वाहियात चीजों को नहीं मानता। हमारे घर में तो भंगिन को भी 'अम्मा' कहा जाता था, ''डीन जैसे अपने आप से बाहर ही नहीं निकल रहे थे।

2. 'पंच परमेश्वर' कहानी की मूल संवेदना लिखिए। 17

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

अथवा

कहानी के तत्वों के आधार पर 'वारिस' कहानी का विश्लेषण कीजिये।

3. 'चीफ की दावत' कहानी 'सांस्कृतिक मूल्यों के विघटन' की कहानी है कथन से सम्बन्धित अपने विचार लिखिए। 17

अथवा

'दोपहर का भोजन' कहानी का प्रतिपाद्य लिखिए।

4. 'उसने कहा था' कहानी के शीर्षक से आप कहाँ तक सहमत हैं। स्पष्ट कीजिये। 16

अथवा

'घुसपैठिये' कहानी हाशिये पर जी रहे दलित समाज की बेचैनियों और छटपटाहटों की कहानी हैं। इस कथन की समीक्षा कीजिये।

5. निम्नलिखित मे से किन्ही **दो** पर टिप्पणी लिखिए। (10+10)

(क) 'तीसरी कसम' कहानी का शिल्प।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

(ख) 'वापसी' कहानी का मूल भाव।

(ग) 'घुसपैठिये' कहानी के शीर्षक की सार्थकता।

(घ) लहनासिंह का चरित्र।

***

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

(5)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

आपका अनुक्रमांक............

I

Sr. No. of Question Paper : 1662

Unique Paper Code : 2052102301

Name of the Paper : Bhartiya Sahitya

Name of the Course : B.A. (Hons) Hindi

Semester : III

Duration : 3 Hours

Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए (10 + 10 + 10)

(क) वत्स ! स्वच्छ प्रसन्न जल की

देख निर्मल कान्ति,

याद आती सन्त मन की

विगत कल्मष शांति !

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

P.T.O.

कलश रख दो और दे दो
मुझे वल्कल चीर,
यहीं अवगाहन करूँगा
धार यह गम्भीर।

अथवा

टहरी पर बैठी होगी, पड़े होंगे सामने फूलों के
सहारे गिर रही होगी
अवधि के बाकी महीनें
बिताए दिनों के सम्पर्क सुख की
यादों का ले रही होगी मन ही मन स्वाद
बिछुड़ी प्यारी के यही तो होते हैं
साधन।

(ख) पिया को खोजने में निकली
सुन ही यह दिन बीता
कब यह रात ढली!
मिले अंत में घर में ही तो
मेरे कंत छली !

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

मेरे उनके स्नेह मिलन की

थी यह घड़ी - भली ।

अथवा

हम सब समान हैं, समानता का आया युग, आया !

मिट रहा कपट, निश्छल जनता का आया युग, आया !

जो सच्चे हैं, वह बड़े ! उन्हीं का आया युग, आया !

यह प्रलय काल दुर्जन कपटी का ! आया युग, आया!

आओ नाचें - गायेंगे जी भर, मोद मनायेंगे !

आनंद छंद मय स्वतंत्रा पर मोद मनायेंगे !

(ग) संसार की भाषाओं की भिन्नता के सम्बन्ध में उसे ज्ञानदान करने के लिए मेरे प्रवृत होने के पहले ही वह दूसरे प्रसंग पर चली गई। 'देखो पिताजी, भोला कह रहा था कि आकाश में हाथी सूंड से पानी डालता है, उसी से वर्षा होती है ओ माँ ! भोला कैसी बेकार की बातें करता है ! खाली बकबक करता रहता है! दिन-रात बकबक लगाए रहता है।'

अथवा

नेहबि राम राक्षस लागि मागि ।

आहे अधिक ह्रदये दहे आगि ।।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

बालक राम किछुवे नाहि जाने ।

ता हेरि रह नाहि प्राणे ।।

2. वैदिक एवं अपभ्रंश भारतीय साहित्य पर विस्तार से चर्चा कीजिए । (15)

अथवा

मैथिली भाषा के साहित्य पर एक निबंध लिखिए।

3. कालिदास रचित 'उत्तरमेघ' के काव्य सौंदर्य पर प्रकाश डालिए । (15)

अथवा

'सप्त पर्ण' राम काव्य का जन्म का प्रतिपाद्य लिखिए।

4. संत नामदेव के पदों का भाव सौंदर्य लिखिए। (15)

अथवा

ललद्यद के पदों का भाषा सौष्ठव लिखिए।

5. 'काबुलीवाला' कहानी का मूल संदेश स्पष्ट कीजिए ।। (15)

अथवा

'रामविजय' नाटक की तात्विक समीक्षा कीजिए।

(3500)

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

(5)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.............

I

Sr. No. of Question Paper : 1720

Unique Paper Code : 2052102302

Name of the Paper : Hindi Natak Evam Ekanki
हिन्दी नाटक एवं एकांकी

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : III

Duration : 3 Hours   Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10×3=30)

(क) अँगरेराज सुख साज सजे सब भारी।
पै धन बिदेश चलि जात इहै अति ख्वारी ।।
ताहू पै महँगी काल रोग बिस्तारी।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

P.T.O.

दिन दिन दूने दुःख ईस देत हा हा री ।।
सबके ऊपर टिक्कस की आफत आई ।
हा हा! भारतदुर्दशा न देखी जाई ।।

अथवा

हा! यह वही भूमि है जहाँ साक्षात् भगवान् श्रीकृष्ण चंद्र के दूतत्व करने पर भी वीरोत्तम दुर्योधन ने कहा था, "सूच्यग्रं नैव दास्यामि बिना युद्धेन केशव" और आज हम उसी भूमि को देखते हैं कि शमशान हो रही है। अरे याहँ की योग्यता, विद्या, सभ्यता, उद्योग? उदारता, धन, बल, मान, दृढ़चित्तता, सत्य सब कहाँ गये? अरे पामर जयचन्द्र! तेरे उत्पन्न हुए बिना मेरा क्या डूबा जाता था? हाय! अब मुझे कोई शरण देनेवाला नहीं। (रोता है) मात; राजराजेश्वरी, विजयिनी! मुझे बचाओ। अपनाए की लाज रक्खो।

(ख) मैं केवल यही कहना चाहती हूँ कि पुरुषों ने स्त्रियों को अपनी पशु-सम्पत्ति समझकर उन पर अत्याचार करने का अभ्यास बना लिया है। वह मेरे साथ नहीं चल सकता। यदि तुम मेरी रक्षा नहीं कर सकते, अपने कुल की मर्यादा, नारी का गौरव नहीं बचा सकते, तो मुझे बेच भी नहीं सकते हो। हाँ, तुम लोगों को आपत्ति से बचाने के लिए मैं स्वयं यहाँ से चली जाऊँगी।

अथवा

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

राजनीति! राजनीति ही मनुष्यों के लिए सब कुछ नहीं है। राजनीति के पीछे नीति से भी हाथ न धो बैठो, जिसका विश्व मानव के साथ व्यापक सम्बन्ध है। राजनीति की साधारण छल्नाओं से सफत्नता प्राप्त करके क्षण-भर के लिए तुम अपने को चतुर समझने की भूल कर सकते हो, परन्तु इस भीषण संसार में एक प्रेम करने वाले हृदय को खो देना, सबसे बड़ी हानि है शकराज! दो प्यार करने वाले हृदयों के बीच में स्वर्गीय ज्योति का निवास है।

(ग) पुरुष वही है जो हत्या करे, रक्तपात में हर्षित हो, हिंसा की हुंकार में जीवन - संगीत ढूँढे। निर्मम, क्रूर, बर्बर, अंधा, बहरा- ऐसा होता है पुरुष। (व्याकुलता से) हम ऐसे पुरुष क्यों नहीं हैं? क्यों हमसे दूसरों का दुख देखा नहीं जाता? क्यों हम दूसरों को कष्ट में देखकर करुणा से भर जाते हैं? क्यों दूसरों की पीड़ा देखकर हमारी आँखों में आँसू आ जाते हैं? क्यों हैं हम ऐसे दुर्बल?

अथवा

मुझे गंदगी से घृणा नहीं, किंतु मैं गंदगी पसंद नहीं करता - बड़ा नाजुक सा फ़र्क है। यदि हमें जीवन का सामना करना है, तो रोज गंदगी से दो-चार होना पड़ेगा, फिर इससे घृणा कैसी? जिन ग़रीबों को तुम अपने बरामदे के फ़र्श पर पाँव न रखने दो, मैं उनके पास घंटों बैठ सकता हूँ।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

2. 'भारत दुर्दशा' एक प्रतीक नाटक है- उदाहरण सहित विवेचना कीजिए। (15)

अथवा

'भारत दुर्दशा' नाटक में चित्रित समस्याओं पर सविस्तार विचार कीजिए।

3. 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक का प्रतिपाद्य स्पष्ट करते हुए, इसकी प्रासंगिकता पर विचार कीजिए। (15)

अथवा

'ध्रुवस्वामिनी' में चित्रित स्त्री प्रश्नों पर सोदाहरण विचार कीजिए।

4. 'कथा एक कंस की' नाटक का केंद्रीय विचार लिखिए। (15)

अथवा

'कथा एक कंस की' नाटक की रंगमंचीयता पर विचार कीजिए।

5. 'उत्सर्ग' एकांकी का मूल भाव सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'तौलिये' एकांकी की मूल संवेदना पर विचार कीजिए।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

(6)

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 1771 I

Unique Paper Code : 2052102303

Name of the Paper : Samanya Bhasha Vigyan

Name of the Course : B.A (Hons.) Hindi

Semester : III

Duration : 3 hours Maximum Marks : 90

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य है।

1. भाषा की परिभाषा देते हुए उसके स्वरूप की विवेचना कीजिए।

अथवा

भाषा की संरचना के प्रमुख स्तर का उल्लेख कीजिए। (15)

2. हिन्दी भाषा की विशेषताएं का उल्लेख कीजिए।

अथवा

P.T.O.

कालिन्दी महाविद्यालय-पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

भाषिक दृष्टि से उपयोगी प्रमुख ध्वनियों का उल्लेख कीजिए। (15)

3. वाक्य संरचना के आधार और भेद का उल्लेख कीजिए।

अथवा

वाक्य के प्रकारों का वर्णन कीजिए। (15)

4. अर्थ की परिभाषा और स्वरूप का उल्लेख कीजिए।

अथवा

अर्थ परिवर्तन के कारण और दशाओं का उल्लेख कीजिए। (15)

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी कीजिए। (10, 10, 10)

(क) हिन्दी भाषा का स्वरूप

(ख) हिन्दी भाषा की संरचना

(ग) भाषा विज्ञान की अध्ययन पद्धतियां

(घ) वाक्य संरचना के तत्व

(ङ) वाक्य का स्वरूप

(च) अर्थ निर्णय के साधन

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

(7)

[This question paper contains 2 printed pages]

Your Roll No. : ....

Sl. No. of Q. Paper : **1692** **I**

Unique Paper Code : 2052103501

Name of the Paper : पाश्चात्य काव्यशास्त्र

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : V

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 90***

निर्देश :

(क) इस प्रश्नपत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

(ख) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. अरस्तू के अनुसार त्रासदी को पारिभाषित करते हुए उसके तत्वों का निरुपण कीजिए। 18

अथवा

लोंजाइनस के उदात्त सिद्धान्त को स्पष्ट कीजिए।

2. कॉलरिज के कल्पना सिद्धान्त का विश्लेषण कीजिए। 18

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

P.T.O.

अथवा

'कविता व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति नहीं, व्यक्तित्व से पलायन है।' इस कथन के संदर्भ में टी.एस. इलियट के निर्वैयक्तिकता के सिद्धान्त की समीक्षा कीजिए।

3. स्वच्छंदतावाद की अवधारणा पर विचार कीजिए। 18

अथवा

संरचनावाद का विश्लेषण कीजिए।

4. बिम्ब की परिभाषा देते हुए काव्य में उसकी भूमिका पर प्रकाश डालिए। 18

अथवा

विसंगति और विडम्बना की अवधारणा को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए : 9+9=18

(क) अनुकरण सिद्धान्त

(ख) वड्र्सवर्थ की काव्य भाषा विषयक मान्यता

(ग) यथार्थवाद

(घ) फैंटेसी

***

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

[This question paper contains 4 printed pages]

Your Roll No. : ....

Sl. No. of Q. Paper : **1745** **I**

Unique Paper Code : 2052103502

Name of the Paper : **आधुनिक हिंदी कविता (छायावादोत्तर)**

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : V

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 90***

निर्देश :

(क) इस प्रश्नपत्र के मिलते ही ऊपर निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

(ख) **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. किन्हीं **दो** काव्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। 8×2=16

(क) यहाँ हर्ष-विषाद, चिंता - क्रोध,
यहाँ है सुख-दुख का अवबोध
यहाँ प्रत्यक्ष औ अनुमान
यहाँ स्मृति-विस्मृति सभी के स्थान
तभी तो तुम याद आती, प्राण,
हो गया हूँ मैं नहीं पाषाण।

P.T.O.

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

अथवा

यह मधु है : स्वयं काल की मौना का युग-संचय,
यह गोरस : जीवन-कामधेनु का अमृत-पूत पय,
यह अंकुर : फोड़ धरा को, रवि को तकता निर्भय,
यह प्रकृत, स्वयम्भू, ब्रह्म, अयुत इसको भी शक्ति को दे दे।

(ख) कविता को
बिखरा कर देखने से
सिवा रेशों के क्या दिखता है
लिखने वाला तो
हर बिखरे अनुभव के रेशे को
समेट कर लिखता है।

अथवा

बचाना है -
नदियों को नाला हो जाने से
हवा को धुआँ हो जाने से
खाने को जहर हो जाने से :
बचाना है - जंगल को मरुथल हो जाने से,
बचाना है - मनुष्य को जंगल हो जाने से।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

2. 'नागार्जुन सच्चे अर्थो में जन कवि है' – स्पष्ट कीजिए। 15

अथवा

गिरिजा कुमार माथुर की कविताओं का मूल स्वर स्पष्ट कीजिए।

3. 'यह दीप अकेला' कविता का मूल भाव क्या है ? 15

अथवा

'रामदास' कविता अपने समय और समाज का आईना है – विचार कीजिए।

4. 'गीतफ़रोश' कविता सामाजिक, राजनैतिक व्यवस्था पर प्रहार एवं कलाकार की दुर्दशा का आईना है – विचार कीजिए। 15

अथवा

कवि जगदीश गुप्त की काव्य-भाषा का वर्णन कीजिए।

5. कुँवर नारायण की कविता गहरे सामाजिक संदर्भो से आबद्ध है – स्पष्ट कीजिए। 15

अथवा

'पानी की प्रार्थना' कविता की प्रासंगिकता पर विचार कीजिए।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

6. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए : 7+7=14

(i) रघुवीर सहाय की कविताओं में स्त्री जीवन का संघर्ष

(ii) 'उनको प्रणाम' कविता की मूल संवेदना

(iii) 'आस्था' कविता का मूलभाव

(iv) 'एक अजीब-सी मुश्किल' कविता का प्रतिपाद्य

***

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

(२)

[This question paper contains 4 printed pages]

Your Roll No. : ....

Sl. No. of Q. Paper : **1801 I**

Unique Paper Code : 2052103503

Name of the Paper : Hindi Aalochna

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : V

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 90***

निर्देश :

(क) इस प्रश्नपत्र के मिलते ही ऊपर निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

(ख) **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांशों के संदर्भ को स्पष्ट करते हुए व्याख्या कीजिए। 10+10+10=30

(क) प्राचीनकाल के अभिनयादि के सम्बंध में तात्कालिक कवि लोगों की और दर्शक मंडली की जिस प्रकार रुचि थी वे लोग तदनुसार ही नाटकादि दृश्यकाव्य रचना कर के सामाजिक लोगों का चित्त विनोद कर गये हैं, किन्तु वर्तमान समय में इस काल के कवि तथा सामाजिक लोगों की रुचि उस काल की अपेक्षा अनेकांश में विलक्षण है इससे संप्रति प्राचीन मत अवलम्बन करके नाटक आदि दृश्यकाव्य लिखना युक्तिसंगत नहीं बोध होता।

P.T.O.

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

अथवा

मौलिकता कथानक में नहीं है, उस कथानक से सिरजा क्या गया है, उसमें है।

इस दृष्टि से 'शक्तिपूजा' में शक्ति-संधान की रचनात्मक व्याख्या है और इसका मूल सूत्र उस परामर्श में है, जो जाम्बवान पराजय की मनःस्थिति में डूबे राम को देते हैं – 'शक्ति की करो मौलिक कल्पना'। अर्थात् शक्ति का संधान मौलिक रूप में ही संभव है, अनुकरणात्मक रूप में नहीं। 'कामायनी' के मनु और 'शक्तिपूजा' के राम की हताश मनःस्थिति एक जैसी है।

(ख) अगर कविता को शब्दों की मीनाकारी ही मान लिया जाये तब यह संगत भी है। 'तार सप्तक' की कविता वैसी जड़ाऊ कविता नहीं है, वह वैसी हो भी नहीं सकती। जमाना था जब तलवारें और तोपें भी जड़ाऊ होती थीं, पर अब गहने भी धातु को सांचों में ढालकर बनाये जाते हैं और हीरे भी तप्त धातु की सिकुड़न के दबाव से बँधे हुए कणों से। 'तार सप्तक' में रूप सज्जा को गौण मानकर अधिक से अधिक सामग्री देने का उद्‌योग किया गया। इसे पाठक के प्रति ही नहीं, लेखक के प्रति भी कर्तव्य समझा गया।

अथवा

तुलसीदास ने राम और सीता के विवाह में यह दिखलाया है कि विवाह प्रेम की परिणति है। यद्‌यपि सीता की प्रीति पुरातन है, फिर भी लोक-व्यवहार की दृष्टि से कंकन किंकिन नूपुर धुनि में राम का मदन दुन्दुभी सुनना, सियमुख की तरफ नयन चकोरों का

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

देखना, और सीता द्वारा राम को हृदय में बिठाकर पलक-कपाट लगा देना आदि क्रियाओं का वर्णन तुलसी के मर्मी कवि हृदय का परिचय ही नहीं देता, उनके रूढ़ियों को तोड़ने वाले साहस का भी परिचय देता है। तुलसी केवल भक्त नहीं है, वे प्रेम और सौन्दर्य के कवि भी हैं।

(ग) एक ही घटना या स्थिति से सभी मनुष्य समान रूप में प्रभावित नहीं होते। हर आदमी की मनोवृत्ति और दृष्टिकोण अलग है। रचना कौशल इसी में है कि लेखक जिस मनोवृत्ति या दृष्टिकोण से किसी बात को देखे पाठक भी उसमें उससे सहमत हो जाए। यही उसकी सफलता है। इसके साथ ही हम साहित्यकार से भी आशा रखते हैं कि वह अपनी बहुज्ञता और अपने विचारों की विस्तृति से हमें जागृत करें, हमारी दृष्टि मानसिक परिधि को विस्तृत करें - उसकी दृष्टि इतनी सूक्ष्म, इतनी गहरी और इतनी विस्तृत हो कि उसकी रचना से हमें आध्यात्मिक आनन्द और बल मिले।

अथवा

कवि सौन्दर्य से प्रभावित रहता है और दूसरों को भी प्रभावित करना चाहता है। किसी रहस्यमयी प्रेरणा से उसकी कल्पना में कई प्रकार के सौन्दर्यों का जो मेल आप से आप हो जाया करता है उसे पाठक के सामने भी प्रायः रख देता है जिस पर कुछ लोग कह सकते हैं कि ऐसा मेल क्या संसाद में बराबर देखा जाता है। मंगल-शक्ति के अधिष्ठान राम और कृष्ण जैसे पराक्रमशाली और धीर है वैसा ही उनका रूप-माधुर्य और उनका शील भी लोकोत्तर है। लोक-हृदय आकृति और गुण, सौन्दर्य और सुशीलता, एक ही अधिष्ठान में देखना चाहता है।

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No..............

आपका अनुक्रमांक............

Sr. No. of Question Paper : 6610 I

Unique Paper Code : 12051501

Name of the Paper : Pashchatya Kavyashastra

Name of the Course : HINDI (Hons.)

Semester : V

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. अरस्तू के विरेचन सिद्धांत का विवेचन कीजिए । (12)

अथवा

लोंजाइनस के उदात्त की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए उसके स्रोत पर प्रकाश डालिए ।

P.T.O.

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

2. वर्ड्सवर्थ की कविता सम्बन्धी मान्यताओं पर प्रकाश डालिए । (12)

अथवा

टी. एस. इलियट के निर्वैयक्तिकता संबंधी सिद्धांत की विवेचना कीजिए।

3. मार्क्सवादी आलोचना पर प्रकाश डालिए । (12)

अथवा

उत्तर संरचनावाद का सामान्य परिचय दीजिए।

4. फैंटेसी का स्वरूप स्पष्ट कीजिए । (12)

अथवा

बिंब से आप क्या समझते है ? बिंब और प्रतीक में अंतर स्पष्ट कीजिए ।

5. किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखिए (9,9,9)

(क) अनुकरण सिद्धांत

(ख) कॉलरिज की काव्य भाषा

(ग) स्वच्छंदतावाद

(घ) वस्तुनिष्ठ सह-संबंध

(ङ) मिथक

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

(1800)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 6654 I

Unique Paper Code : 12031502

Name of the Paper : British Literature: Early 20th Century

Name of the Course : B.A.(Hons) English

Semester : V

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

Instructions for Candidates

1. Write your Roll. No. on the top immediately on receipt of this question paper.

2. This question paper contains 2 parts. Both parts are compulsory.

3. Candidates have to answer ANY THREE questions in Part A and ANY THREE questions in Part B.

4. Questions in Part A carry 10 marks each and questions in Part B carry 15 marks each.

P.T.O.

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

PART A

Attempt any 3 questions.

(3 x 10 = 30)

1. "The yarns of seamen have a direct simplicity, the whole meaning of which lies within the shell of a cracked nut. But Marlow was not typical...and to him the meaning of an episode was not inside like a kernel but outside.." Comment on the layers of meaning in Marlowe's narrative in *Heart of Darkness.*

2. Write the importance of the car and skywriting episodes in Virginia Woolf's *Mrs Dalloway.*

3. Identify and explain the significance of meta-theatrical elements in *Waiting for Godot.*

4. Explain with reference to the context the following extract:

   A shudder in the loins engenders there

   The broken wall, the burning roof and tower

   And Agamemnon dead.

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

5. Describe the Id, the Ego and the Superego with reference to Freud's structure of the Unconscious.

Part B

Answer any THREE questions

(3 x 15 = 45)

6 "The narrative of *Heart of Darkness* excludes women from the colonial enterprise as well as its critique." Discuss the representation of women in Conrad's novel in the light of the aforesaid statement.

7. "Virginia Woolf's *Mrs Dalloway* subverts its own unitary narrative authority through multiple voices and discourses." Do you agree? Give a reasoned answer.

8. Critically examine *Waiting for Godot* belonging to the tradition of 'The Theatre of the Absurd'.

9. How does T.S. Eliot's poem "The Hollow Men" express the fragmentation and spiritual emptiness at the core of post-World War I European civilisation.

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

10. How has the character of metropolis changed in modernist literature according to Raymond Williams? Explain with examples.

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

(12)

[This question paper contains 4 printed pages]

Your Roll No. : ....

Sl. No. of Q. Paper : **6655** **I**

Unique Paper Code : 12051502

Name of the Paper : हिंदी नाटक/एकांकी

Name of the Course : **B.A. (H) Hindi**

Semester : V

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 75***

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश :

(a) इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

(b) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। 9×3=27

(क) जेहि छिन बलभारे हे सबै तेग धारे ।
तब सब जग धाई फेरते हे दुहाई ।।
जग सिर पग धारे धावते रोस भारे ।
विपुल अवनि जीती पालते राजनीति ।।
जग इन बल काँपै देखिकै चण्ड दापै ।।
सोई यह प्रिय मेरे ह्वै रहे आज चेरे ।।

P.T.O.

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

अथवा

हाँ, सुनिए। फूट, डाह, लोभ, भय, उपेक्षा, स्वार्थपरता, पक्षपात, हठ, शोक, अश्रुमार्जन और निर्बलता इन एक दूरजन दूती और दूतों को शत्रुओं की फौज में हिला - मिलाकर ऐसे पंचामृत बनाया कि सारे शत्रु बिना मारे घण्टा पर के गरुड़ हो गए। फिर अन्त में भिन्नता गई। इसने ऐसा सबको काई की तरह फाड़ा कि भाषा, धर्म, चाल, व्यवहार, खाना; पीना सब एक - एक योजन पर अलग - अलग कर दिया। अब आवें बचा ऐक्य! देखें आ ही के क्या करते हैं।

(ख) भयानक समस्या है। मूर्खों ने स्वार्थ के लिए साम्राज्य के गौरव का सर्वनाश करने का निश्चय कर लिया है ! सच है, वीरता जब भागती है, तब उसके पैरों से राजनीतिक छलछन्द की धूल उड़ती है।

अथवा

मैं अपनी आँखों से अपना वैभव और अधिकार दूसरों को अन्याय से छीनते देख रहा हूँ और मेरी वाग्दत्ता पत्नी मेरे ही अनुत्साह से आज मेरी नहीं रही। नहीं, यह शील का कपट, मोह और प्रवञ्चना है। मैं जो हूँ, वही तो नहीं स्पष्ट रूप से प्रकट कर सका। यह कैसी विडंबना है! विनय के आवरण से मेरी कायरता अपने को कब तक छिपा सकेगी ?

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

(ग) पच्चीस साल से इस बकरी की खोज हो रही थी। सरकार का खुफिया विभाग, पुलिस, पलटन सब इसे खोज रहे थे। आखिरकार यह बकरी आपके गाँव में मिली है। यह गाँधी जी की बकरी है। गाँधी महात्मा की बकरी है। जिन्होंने आपको इस लाइक बनाया कि आप आज इस तरह शान से खड़े हैं। आपको आज़ादी दिलाई सब लोग प्रेम से बोलिए गाँधी महात्मा की जय !

अथवा

बेटा यह कुटुंब एक महान वृक्ष है। हम सब इसकी डालियाँ हैं। डालियों ही से पेड़ पेड़ है और डालियाँ छोटी हों चाहे बड़ी, सब उसकी छाया को बढ़ाती है। मैं नहीं चाहता, कोई डाली इससे टूटकर पृथक् हो जाए। तुम सदैव मेरा कहना मानते रहे हो। बस यही बात मैं कहना चाहता हूँ ।

2. क्या 'भारत दुर्दशा' नाटक दुखांत है ? युक्तियुक्त विवेचना कीजिए। 12

अथवा

'भारत दुर्दशा' नाटक के मूल कथ्य पर प्रकाश डालिए।

P.T.O.

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

3. 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक की प्रासंगिकता पर विचार कीजिए। 12

अथवा

'ध्रुवस्वामिनी नाटक के नायकत्व पर प्रकाश डालिए।

4. 'बकरी' नाटक में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए। 12

अथवा

नाटक के तत्वों के आधार पर 'बकरी' नाटक की समीक्षा कीजिए।

5. 'स्ट्राइक' एकांकी की मूल संवेदना लिखिए। 12

अथवा

'तीन अपाहिज' एकांकी के उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए।

***

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

(13)

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 2005 **I**

Unique Paper Code : 2053100008

Name of the Paper : हिंदी सिनेमा : व्यावसायिक संदर्भ

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi – DSE**

Semester : V

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. हिंदी सिनेमा के स्वरूप पर प्रकाश डालिए। (18)

अथवा

सिनेमा के विभिन्न प्रकारों पर प्रकाश डालिए।

2. विश्व बाज़ार में भारतीय सिनेमा का क्या स्थान है? (18)

अथवा

P.T.O.

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

हिन्दी सिनेमा को तकनीक और ब्रांड के बाजार ने कितना परिवर्तित किया है? स्पष्ट करें।

3. क्षेत्रीय सिनेमा के वैश्विक बाजार पर प्रकाश डालिए। (18)

अथवा

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी सिनेमा में और आर्थिक परिप्रेक्ष्य में आए बदलाव को रेखांकित कीजिए।

4. 'मेरा नाम जोकर' फिल्म की समीक्षा कीजिए। (18)

अथवा

'जंजीर' फिल्म के भीतर सकारात्मक मूल्यों पर प्रकाश डालिए।

5. **किन्हीं दो** पर टिप्पणी लिखिए - (9×2=18)

(क) मूक सिनेमा

(ख) गीत और संगीत का बाजार

(ग) रीमेक सिनेमा

(घ) 'दिल वाले दुल्हनिया ले जाएँगे' फिल्म की समीक्षा

(1000)

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

(15)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

I

Sr. No. of Question Paper : 2006

Unique Paper Code : 2053100009

Name of the Paper : हिंदी यात्रा साहित्य

Name of the Course : B.A. (Hons.) HINDI – DSE

Semester : V

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1. निम्नलिखित गद्यांशों की व्याख्या कीजिए : (8+8=16)

(क) किन्नर देवताओं का देश है, अलंकारिक नहीं सीधी भाषा में। देवता प्रकाश के प्राणी कहे गये है, किन्तु मैं समझता हूँ वह घोर अंधकार वासी हैं। जब तक मनुष्य के हृदय में घोर अज्ञान न हो देव लोग वहाँ ठहरना नहीं चाहते। कल (23 मई) दो

P.T.O.

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

मील नीचे कोठी की देवी का मेला था। देवी-देवताओं के लिए हर महीने मेला या भोज होता रहता है। कहीं-कहीं तो मेले के समय देवता के भण्डार से शराब की सदाव्रत भी दी जाती है। नहीं दी जाये, तो भी देवताओं का मेला शराब के विना कैसे हो सकता है? देवताओं ने शराबबंदी हटाने के लिए राजा को मजबूर किया उसके कुल तक को नष्ट कर देना चाहा।

अथवा

"यायावर पुराविद् नहीं होते, न पुरातत्व उनके लिए स्वयं एक साध्य होता है - वह केवल दूसरों के संचित अनुभव के फल के रूप में महत्व रखता है। यह महत्व कम नहीं है, और यह कथन पुरातत्व को अवज्ञा तो कदापि नहीं है। तक्षशिला, नालन्दा, सारनाथ, ये नाम यायावर के शरीर में पुलक उत्पन्न करते हैं किन्तु इसलिए नहीं कि वे प्राचीन खंडहरों के नाम हैं, वरन् इसलिए कि ये सांस्कृतिक विकास के समष्टि के अनुभव पर आधारित जीवन की उन्नततर परिपाटियों के आविष्कार के-कीर्ति-स्तम्भ हैं। अन्ततोगत्वा बात एक ही है, किन्तु एक नहीं भी है। भेद आत्यन्तिक वस्तु का नहीं है, केवल दृष्टिकोण का है, वस्तु से व्यक्ति के सम्बन्ध का भेद है।

(ख) इन पहाड़ों के पीछे न जाने क्या होगा? जब हम छोटे थे, तो अपने घर के बरामदे में खड़े होकर अक्सर एक-दूसरे से यह प्रश्न पूछा करते थे। उन दिनों छुट्टी लेकर पहाड़ों पर जाने की

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

जरूरत महसूस नहीं होती थी - वे हमेशा हमारे संग थे, हमारे खेलों में, हमारे सपनों में। तब पहाड़ों की शक्ल, उनकी भाव-भंगिमा बिलकुल अलग, दूसरी किस्म की थी, जैसे माँ की शक्ल जो बच्चों की आँखों मे होती है, वह दूसरों के लिए नहीं होती।उसकी पहचान ही अलग होती है।

अथवा

आज तो उमानन्द जनविहीन-सा दिख रहा है किन्तु शिवरात्रि पर यहाँ ऐसा जन-अरण्य लगता है कि साथ छुट जाए तो साथी को ढूँढते ही रहिये। शिवरात्रि को सूर्योदय से पहले ही दर्शनार्थियों का यहाँ ताँता लग जाता है सैकड़ो नाव-जहाज श्रद्धालुओं को ले जाने, लाने के काम में देर रात तक जुटे रहते हैं। वैसे ये तीनों द्वीप आसपास ही हैं, जहाँ नाव द्वारा कभी-भी जाया जा सकता है परन्तु वर्षाऋतु में जाना श्रेयस्कर है, तब ब्रह्मपुत्र उफान पर होता है।

2. यात्रा साहित्य का अर्थ समझाते हुए, इसके तत्वों का उल्लेख कीजिए। (15)

अथवा

यात्रा साहित्य को परिभाषित करते हुए इसका महत्व बताइए।

3. यात्रा साहित्य समाज और संस्कृति को समझने में कैसे सहायक है? स्पष्ट कीजिए। (15)

P.T.O.

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

अथवा

स्वतंत्र्योत्तर हिन्दी यात्रा साहित्य का सामान्य परिचय दीजिए।

4. हिंदी यात्रा साहित्य में राहुल सांकृत्यायन के योगदान को स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'अरे यायावर रहेगा याद' यात्रा-वृत्तांत के सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व पर प्रकाश डालिए।

5. निर्मल वर्मा कृत चीड़ों पर चाँदनी यात्रा-वृत्तांत के शीर्षक की सार्थकता पर विचार कीजिए। (15)

अथवा

'कामाख्या क्षेत्रे गुवाहाटी नगरे यात्रा वृत्तांत का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

6. **किन्हीं दो** पर टिप्पणी लिखिए : (7+7=14)

(क) द्विवेदी युगीन यात्रा साहित्य

(ख) चीड़ों पर चाँदनी में प्रकृति चित्रण

(ग) यात्रा और यायावर

(घ) यात्रा-साहित्य की विशेषताएँ

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

(1000)

(5)

[This question paper contains 4 printed pages]

Your Roll No. : ....

Sl. No. of Q. Paper : **6766** **I**

Unique Paper Code : 12057503

Name of the Paper : अस्मितामूलक विमर्श और हिंदी साहित्य

Name of the Course : **B.A. (H) Hindi DSE - I**

Semester : V

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 75***

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश :

(i) इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(ii) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. भारतीय नारीवाद के विकास - क्रम में दलित स्त्रीवाद का स्वरूप समझाइए। 15

अथवा

आदिवासी अस्मिता के संकटों का संज्ञान लेते हुए आदिवासी साहित्य की अवधारणा पर प्रकाश डालिए।

2. किन्हीं तीन अंशों की सप्रगंग व्याख्या कीजिए : 10×3=30

P.T.O.

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

(क) बारात ठहराने के लिए स्कूल का बरामदा ही मिल पाया था। प्रधान जी ने स्कूल खोल देने की हामी तो भर दी थी लेकिन ऐन वक्त पर हेडमास्टर कहीं रिश्तेदारी में चले गए थे। काफ़ी भाग - दोड़ के बाद भी चाबी नहीं मिली थी। आखिर हारकर बारात को बरामदे में ही ठहराना पड़ा था। स्कूल में जो हेंडपंप था, एक रात पहले किसी ने उसका हत्था और वाल्व भी खोल दिए थे। पीने के पानी का कोई और इंतजाम वहाँ नहीं था। बड़ी मुश्किल से दो मिट्टी के घड़े ही मिल पाए।

अथवा

इस दौरान गोविंद गुरु ध्यानावस्था से निकल आए थे और पद्मासन खोलते हुए उन्होंने भरत्या और गनी की बात सुन ली थी। गोविंद गुरु बोले - अरे भरत्या, तू गया नहीं ? और सुन, ये तेरी भाभी जगंल के जीवन से भली - भांति परिचित हैं। तेरे को डरने की जरूरत नहीं है। यह सारा काम कर लेती है। और तू सुना, घर में सब ठीक है न, तेरे एक बेटा एक बेटी है न।

(ख) मेरे बेटे के साथ
अपने बेटे को भेजो
दिहाड़ी की खोज में।
और अपनी बिटिया को
हमारी बिटिया के साथ
भेजो कटाई करने
मुखिया के खेत में।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

शाम को थक कर
पसर जाओ धरती पर
सूँघो खुद को
बेटे को
बेटी को
तभी जान पाओगे तुम
जीवन की गंध को
बलवती होती है जो
देह की गंध से।

अथवा

क्या तुम जानते हो
एक स्त्री के समस्त रिश्ते का व्याकरण
बता सकते हो तुम
एक स्त्री को स्त्री - दृष्टि से देखते
उसके स्त्रीत्व की परिभाषा ?
अगर नहीं
तो फिर जानते क्या हो तुम
रसोई और बिस्तर के गणित से परे
एक स्त्री के बारे में ......!

(ग) आगे चल कर पिताजी के प्रति मेरी घृणा विकराल रूप लेती चली गई। इसी समय स्कूल में कुछ नए कमरे बनाए जा रहे थे। स्कूल से थोड़ी दूर पर ईंट का भट्टा था जहाँ से ईंटें लाकर इमारत बनाई जा रही थी। मेरे पिता जी कहते थे कि स्कूल बनाना पुण्य का काम है,

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

इसलिए वे अक्सर हरवाही बंद कर उस भट्ठे से सिर पर ईंटें लादकर स्कूल में रख देते। वे मिट्टी का गारा भी बनाते। पूरा दिन इन्हीं कामों मे वे बिना किसी मजदूरी के लगा देते थे। उनका ऐसा व्यवहार अत्यंत परोपकारी था, किंतु माँ के प्रकरण से उत्पन्न घृणा मेरे अंदर बढ़ती ही गई।

अथवा

आरंभ में प्रायः सभी देशों के समाज में स्त्री को कुछ स्पृहणीय स्थान नहीं दिया परंतु सभ्यता के विकास के साथ – साथ स्त्री की स्थिति में भी परिवर्तन होता गया। वास्तव में स्त्री की स्थिति समाज का विकास नापने का मापदंड कही जा सकती है। नितांत बर्बर समाज में स्त्री पर पुरुष वैसा ही अधिकार रखता है जैसा वह अपनी अन्य स्थावर संपत्ति पर रखने को स्वतंत्र है। इसके विपरीत पूर्ण विकसित समाज में स्त्री पुरुष की सहयोगिनी तथा समाज का अवश्यक अंग मानी जाकर माता तथा पत्नी के महिमामय आसन पर आसीन रहती है।

3. किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखिए : 10×3=30

(i) स्त्री अस्मिता की दृष्टि से 'सात भाइयों के बीच चंपा'

(ii) 'अछूत की शिकायत' कविता में दलित चेतना

(iii) 'सलाम' कहानी का प्रतिपाद्य

(vi) क्रांतिवीर मदारी पासी का व्यक्तित्व

(v) 'सोनवा का पिंजरा' कविता की संवेदना

(vi) पाश्चात्य स्त्री विमर्श का स्वरूप

***

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY